Diversity in Indian Culture, Language, and Literature

Dr.S.Kunjamma

Diversity in Indian Culture, Language, and Literature

Chief Editor

Dr.S.Kunjamma

Editors

Dr.Darwin L, Dr.Padmadas K.L

Dr. Usha Raja Varier, Dr. S. R Jayasree

Dr. Sheeba M. Kurian, Dr. Hepsy Rosemary A

SCHOOL OF INDIAN LANGUAGES
UNIVERSITYOF KERALA
2021

ARAM BOOK HOUSE

ISBN : 978-80-93542-26-3

Title : Diversity in Indian Culture, Language, and Literature

Editor : Dr.S.Kunjamma

Edition : December, 2021

Copyright : Editor

Total Page : 364

Rs : 270/-

Publisher : **Aram Book House,**
7A,Veerabhatra 2nd Street,
Sathy Road, Erode-3
77088-21464, 85084-84583
arampathippakam@gmail.com

Disclaimer: The publisher cannot be held responsible for errors or any consequences arising from the use of information in this Book; the views and opinions expressed do not necessarily reflect those of the publisher.
The author/publisher has attempted to trace and acknowledge the materials reproduced in this book; and apologize if permission and acknowledgements to publish in this form have not been given. If any material has not been acknowledged please write and let us know so that we may rectify it.

42. भारतीय मध्यवर्गीय समाज और स्त्री की आर्थिक स्वतंत्रता एक बहुआयामी प्रश्न (लक्ष्मी कण्णन की कहानी 'इंडिया गेट' के विशेष संदर्भ में)

Dr. Soorya E. V
Department of Hindi
Sree Narayana college Kollam

आज हम 21वीं सदी में पदार्पण कर चुके हैं। लेकिन आज भी नारी की सबसे बड़ी विवशता उसकी पराधीनता ही है। इससे मुक्त होने का सबसे बड़ा औजार आर्थिक स्थिति में बदलाव या स्त्री का आर्थिक रूप से स्वतंत्र होना ही है. लक्ष्मी कण्णन की 'इंडिया गेट' 1996 में हंस पत्रिका के दिसंबर अंक में प्रकाशित एक कहानी है। प्रस्तुत कहानी भले ही तत्कालीन समय की स्त्री की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक विसंगतियों को उजागर करती है लेकिन यह इक्कीसवीं सदी में भी प्रासंगिक प्रतीत होती है। लेखिका अपनी इस कहानी के माध्यम से तमिलनाटु के विशेषकर तिरुची गाँव के ब्राह्मण परिवारों में प्रचलित रीति-रिवाज़ों के चलते स्त्री भोगी रही समस्याएँ, लैंगिक असमानता तथा आर्थिक-आत्मनिर्भर स्त्री की अस्वतंत्रता आदि मुद्दों पर कई सवाल खड़ा करती हैं। जैसा कि, यदि आर्थिक आत्मनिर्भरता एक स्त्री को स्वतंत्रता की ओर ले जाती है, तो वह वही पुरानी परंपराओं के बीच फँसने पर क्यों विवश होती है? एक आर्थिक आत्मनिर्भर स्त्री को आज भी पुरुष के बराबर सम्मान क्यों नहीं दिया जाता है? इस प्रकार कहानी आर्थिक आत्मनिर्भर स्त्री की अस्मिता के कई प्रश्नों की ओर इशारा करती है।

प्रस्तुत कहानी 'इंडिया गेट' की पद्मावती एक बैंक अफसर है। वह अपने परिवार के साथ तमिलनाटु के मद्रास शहर में रहती है। मद्रास में ही रहने वाले बलरामन, जो कि पद्मावती की तरह एक बैंक अफसर भी है, की तरफ से पद्मावती के लिए शादी का रिश्ता आता है। इस बात से पद्मावती के घर वाले एक तरफ बहुत खुश होते हैं और दूसरी तरफ बलरामन के पदोन्नति के रूप में दिल्ली तबादला होने वाली खबर से परेशान भी होते हैं। अत: बलरामन अपने परिवार के साथ जब रिश्ता पक्का करने घर आता तब पद्मावती के पिता दोनों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए कहता है कि **"यदि बलरामन दिल्ली जाने से इनकार कर यहीं मद्रास में ही नौकरी करेगा तो दोनों के लिए यह अच्छा होगा।"** पृ. 20 लेकिन इस बात से गुस्सा होकर बलरामन का बड़ा भाई कहता है कि **"देखिए, आप चाहे, तो अपनी बेटी से कह सकते हैं कि वह नौकरी से इस्तीफा दे दे। अगर यह आईडिया अच्छा न लगे, तो दूसरा घर ढूँढ लीजिए।"** पृ.20 यानि कि बलरामन का परिवार

जिस नौकरी में उसके तबादले को लेकर गर्व महसूस करता है उसी नौकरी पर कार्यरत पद्मावती से इस्तीफा देने को कहता है। इस स्थिति से यह बात पुन: स्थापित होती है कि स्त्री की किसी भी प्रतिभा को पुरुष वर्चस्ववाद स्वीकार करने को तैयार नहीं बल्कि वह चाहता है कि स्त्री सिर्फ पुरुष की दासी बनकर रह जाए।

अक्सर चाहे बेटी कितने भी बड़े पद पर क्यों न हो, पर उसके परिवार को सबसे ज्यादा चिन्ता उसकी शादी को लेकर रहती है। कहानी में पद्मावती के लिए कई रिश्ते आने के बाद भी उसकी शादी तय नहीं हो पाती है जिससे उसके माँ-बाप परेशान रहते हैं। इस वजह से पद्मावती का पिताजी बलरामन के रिश्ते को आसानी से ठुकराना भी नहीं चाहता है। अत: वह अपनी बेटी की नौकरी को कमतर समझने वाले लोगों को घर से भगाने के बजाय उस बात को हल्के में लेते हुए शादी की बात को आगे बढ़ाता है साथ ही अपनी बेटी से अपने मैनेजर सर से दिल्ली में अपना तबादले करवाने की बात करने का सलाह भी देता है। यहाँ पर यह बात साफ नज़र आती है कि समाज में आज भी स्त्री की पहचान व स्व के पहले उसकी शादी को ही महत्व देता है। अत: जहाँ आर्थिक आत्मनिर्भरता को हम स्त्री की स्वतंत्रता के रूप में देखते लगते हैं वहाँ कभी यह भी स्त्री अस्मिता के सामने कम होता प्रतीत हो रहा है।

अपने परिवारों के कहने पर जब पद्मावती अपनी तबादले की बात करने अपने मैनेजर के पास जाती है तब उसे संयोगवश पदोन्नति के रूप में उसके तबादला दिल्ली में होने की खबर मिलती है। लेकिन उसके होने वाला पति बलरामन इसे पद्मावती की कड़ी मेहनत का परिणाम के रूप में नहीं मानता है। पद्मावती पुरुष की इस संकीर्ण मनोवृति के विषय में सोचती है कि, **''पुरुष की पदोन्नति हो तो वह उसकी लगन और मेहनत का परिणाम मानते हैं जबकि स्त्री अगर अपनी लगन और परिश्रम से उन्नति करे तो उसे उसकी अपनी प्रतिभा नहीं मानते हैं।"** पृ.11 इस संदर्भ में प्रसिद्ध आलोचिका अनामिका का कहना यह है कि **"दोषी पुरुष नहीं हैं, वह पितृसत्तात्मक व्यवस्था है जो जन्म से लेकर मृत्यु तक पुरुषों को लगातार एक ही पाठ पढ़ाती है कि स्त्रियां उनसे हीन हैं।"** पृ.11

पद्मावती केवल अपनी पहचान को लेकर ही नहीं बल्कि दहेज के खिलाफ भी अपनी आवाज़ बुलंद करती है। यहाँ पद्मावती अपने आर्थिक आत्मनिर्भर होने के बावजूद भी उससे दहेज का सौदा करने वाली स्थिति का विरोध करते हुए कहती है कि **"मैं एक कमाऊ लड़की हूँ। उस पर से बर्तन, गहने, कपड़े-लेट, हाथ में नकदी और इन सबको लेकर सौदेबाजी। उसे भी परंपरा, रीति-रिवाज़ खाकर मान लिया जाए। इन सब से ऊपर मुझसे इस्तीफा देने के लिए कह रहे हैं। ये होते कौन हैं मेरी नौकरी में रोड़े अटकाने वाले।"** पृ. 20

अपने कई विरोधों के बावजूद स्वयं पद्मावती ने अपनी नौकरी के बल पर बलरामन से शादी करने से राजी होती है। लेकिन जब वह शादी होकर ससुराल में प्रवेश करती है

तब वहाँ की नई स्थितियों से वह और अधिक उबाऊ होने लगती है। शादी के दूसरे दिन ही उसे पता चलता है कि उसके ससुराल में रीति-रिवाजें कुछ अलग किस्म के हैं . पद्मावती ससुराल के अन्य पुरुषों के मुकाबले में अधिक पढ़ी लिखी है। लेकिन स्त्री होने के कारण उससे घर की सारी रीति-रिवाज़ों का पालन करने को कहा जाता है। कहानी के एक संदर्भ में पुरुष प्रधान सोच रखने वाली पद्मावती की सास कहती है कि **"बेचारे हमारे ये लड़के धूप-पानी में जाकर पसीना बहाकर कमाकर लाते हैं। अच्छी तरह खिलाओ"**। पृ. 22 इस बात से क्रोधित होकर पद्मावती सोचने लगती है कि **"क्या मैं धूप और पानी में जाकर नहीं कमाती? या फिर औरतों द्वारा किए गए काम इनकी दृष्टि में नहीं पड़ते?"** पृ. 22 पद्मिनी की परेशानी को देखते हुए उसकी भाभी पूछती है कि **"क्यों पद्मिनी? कुछ खोई-खोई सी हो?", "पद्मिनी, तुम जैसी पढ़ी-लिखी लड़की के लिए ये सब जंगली जान पड़ता होगा. है ना? क्या करे? अपने तमिलनाडु के रीति-रिवाज़ ही कुछ ऐसे हैं. और तो और, यह पूरा गांव ही ऐसा है।"** पृ. 22

अपने पति के समान पद पर कार्यरत होने के बावजूद ससुराल के अन्य सदस्यों की तरह पद्मिनी के पति के मन में भी उसके प्रति कोई इज्ज़त भरी भावना नहीं है बल्कि वह उसे एक नौकरानी की तरह देखता है। पद्मिनी कहती है कि **"अगर पढ़ने-लिखने और अच्छे कमाने के बाद भी औरत को कोई इज्ज़त न दे, तो फिर पढ़ने की ज़रूरत ही क्या है?"** पृ. 24 यहाँ पर पद्मिनी ससुराल में अपने साथ हो रहे इस भेदभावपूर्ण व्यवहार से ऊब जाती है और अपने दाम्पत्य संबंध को भी इस तरह व्यर्थ मानने लगती है जहाँ इज्ज़त और प्यार की कोई जगह न हो, लेकिन बलरामन पति होने का अपना अधिकार पद्मावती पर जताना नहीं भूलता। जब पद्मिनी अपने पैसे से एक फ्लैट खरीदने को सोचती है तब उसका पति उस पर इस तरह टूट पड़ता है कि **"मुझसे सलाह किए बगैर तुम्हें बैंक से हाउसिंग लोन लेने की हिम्मत कैसे हुई?"** 26 इस संदर्भ में मशहूर लेखिका रमणिका गुप्ता का कहना यह है कि **"औरत का केवल स्वतंत्र होकर निर्णय ले सकना या आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो जाना ही उसकी अस्मिता नहीं है। सही मायने में स्त्री अस्मिता का अर्थ होगा स्त्री के प्रति समाज का दृष्टिकोण और मानसिकता में बदलाव, जिसमें स्त्री के खुद का दृष्टिकोण भी शामिल है।"** पृ.55

कुल मिलाकर कहा जाए तो लैंगिक भेद-भावपूर्ण मानिसकता एक स्त्री की काबिलियत को भी जब नकारने लगती है तब स्त्री को दबाए रखने के पुरुष वर्चस्व की राजनीति साफ पता चलती है। पूरी कहानी इस षडयंत्र की ओर इशारा करती है। सदियों से आर्थिक परतंत्रता ने ही स्त्री को पुरुष के आधीन रहने को विवश किया है। अत: स्त्री की आर्थिक स्वतंत्रता स्त्री विमर्श का एक महत्वपूर्ण मुद्दा ही है। लेकिन एक आर्थिक आत्मनिर्भर स्त्री को भी दहेज, संस्कृति, स्त्री के प्रति बनी नीच मानसिकता आदि कई संकट से गुज़रना पड़ता है। इस तरह स्त्री की आर्थिक-आत्मनिर्भरता को कम महत्व देना उसके साथ किए

जा रहे भेदभाव को ही दर्शाता है। अत: केवल आर्थिक ढ़ाँचा बदलने से स्त्री को पुरुष के साथ बराबरी का दर्जा नहीं मिल सकता, उसके लिए समाज में स्त्री के प्रति बनी मानसिकता में बदलाव लाने की जरूरत है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. हंस, दिसंबर, 1996 पृ. 20
2. वही
3. पृ.11
4. अनामिका, स्त्रीत्व का मानचित्र, पृ.11
5. हंस, दिसंबर, 1996 पृ.20
6. पृ.22
7. हंस, दिसंबर, 1996, पृ.22
8. वही
9. हंस, दिसंबर, 1996, पृ.24
10. हंस, दिसंबर, 1996, पृ.26
11. रमणिका गुप्ता, स्त्री विमर्श - कलम और कुदाल के बहाने, पृ. 55,